रघुवीर सहाय

रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसम्बर, 1929 को लखनऊ में हुआ था। उनकी कविता आदिम संगीत शीर्षक से "आजकल" के अगस्त, 1947 अंक में प्रकाशित हुई। 1950 में अपनी पत्रकारिता "दैनिक जनजीवन" में उप-संपादक के रूप में शुरू की थी। वर्ष 1951 में लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया। वर्ष 1950 से 1990 तक लगातार उनकी पत्रकारिता-यात्रा गतिमान रही और इस दौरान नवजीवन, संचेतना, प्रतीक, कल्पना, धर्मयुग, नवभारत टाइम्स, जनसत्ता के माध्यम से उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को नई दिशा दी तथा साहित्य एवं पत्रकारिता के बीच की दूरी को भरा।

रघुवीर सहाय ने सामाजिक यथार्थ के प्रति अधिक-से-अधिक जागरूक रहकर वैज्ञानिक तरीके से समाज को समझने की कोशिश की। वे यथार्थ को नए सिरे से देखना चाहते थे और शोषण, अन्याय, हत्या, व्यभिचार या नौकरशाही के कारनामों का वह पक्ष चित्रित करते थे, जिन्हें पत्रकार आम तौर पर छोड़ देते थे या पकड़ नहीं पाते। उनका मानना था कि आज निम्न वर्ग के अलावा स्त्री और बच्चे सबसे कमजोर हैं, जो अमानवीयकरण की शक्तियों का प्रथम शिकार होते हैं अत: उन्होंने हमेशा इनकी मुक्ति के लिए अपनी कलम की धार तेज की।

वे वर्ष 1959 से 1963 तक आकाशवाणी संवाददाता रहे और वर्ष 1963 से 1968 तक नवभारत टाइम्स के विशेष संवाददाता के रूप में संसद की गतिविधियों को कवर करते रहे। रघुवीर सहाय का कहना था - "वही खबर नहीं है, जो लोगों को चौंकाती है, खबर वह भी है जो लोगों की भरोसा देती है, हिम्मत बंधाती है और समाज में अपनी शक्ल का प्रतिबिंब देखने को देती है।"

उनकी कविताएं भविष्य की खबरें लेकर आती सी महसूस होती थीं। वे भारतीय लोकतंत्र की दुरवस्था के प्रति सजग थे। उनका कहना था कि कविता को सिर्फ निराशा या नकारात्मकता से ही भरा हुआ नहीं होना चाहिए। उसमें आशा, जिजीविषा, मनुष्यत्व की जीव का लक्ष्य होना चाहिए। कविता में उम्मीद बची रहनी चाहिए। अज्ञेय की पुस्तक दूसरा सप्तक में रघुवीर सहाय की कविताओं को शामिल किया गया।

उनकी रचनाएं हैं-

काव्य संग्रह - सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरूद्ध, हंसो हंसो जल्दी हंसो, लोग भूल गए हैं, कुछ पते कुछ चिटिठ्यां।

कहानी संग्रह - जो आदमी हम बना रहे हैं

निबंध संग्रह - दिल्ली मेरा परदेस, लिखने का कारण, ऊबे हुए सुखी, वे और नहीं होंगे जो मारे जाएंगे।

30 दिसम्बर, 1990 को नई दिल्ली में उनका देहांत हुआ ।